



# बढ़ते कदम

वर्ष-17  
अंक-06  
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



राजभाषा पर विशेष

# भारत के संविधान में राजभाषा

राजभाषा नियम, 1976  
(यथासंशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

## 6। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

## 7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि-

- (1) कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।
- (2) जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।
- (3) यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

## 8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना -

- (1) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।
- (2) केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।
- (3) यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।
- (4) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।



**मोहित सिन्हा**  
मंडल रेल प्रबंधक  
पूर्व रेलवे/ मालदा

### हिन्दी दिवस संदेश

प्यारे रेलकर्मी साथियो!

हिन्दी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर, 1949 का स्मरणीय एवं ऐतिहासिक दिन याद आना स्वाभाविक है जब देश के विशाल जनसमूह में हिन्दी भाषा के प्रयोग एवं इस भाषा की संपन्नता को देखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को संघ की राजभाषा बनाने का निर्णय लिया था। आज के प्रबल प्रतिस्पर्द्धा के युग में सर्वांगिण विकास के लिए यह आवश्यक है कि हमें हिन्दी का भी उतना ही अच्छा ज्ञान हो जितना अपनी मातृभाषा या किसी विदेशी भाषा का।

रेलवे में हिन्दी तभी सबल और सुदृढ़ होगी जब संगठित होकर हम अपने-अपने क्षेत्र में हिन्दी में अधिकाधिक सर्वोत्तम योगदान देंगे। भारतीय रेल पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य तो कर ही रही है साथ ही विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों को आपस में जोड़कर सहिष्णुता का संदेश भी फैला रही है जिस प्रकार महान राष्ट्र का निर्माण उस देश के वासियों के योगदान एवं मेहनत से होता है, उसी प्रकार किसी संगठन का निर्माण उसके सदस्यों की लगन और सच्चे परिश्रम से ही संभव है। भारतीय रेल का यह मंडल हिन्दी के प्रचार प्रसार में निरंतर अग्रणी रहा है, हिन्दी के क्षेत्र में मंडल द्वारा किये जा रहे कार्य निसंदेह सराहनीय हैं लेकिन अब भी कई ऐसे कार्य हैं जिन्हें हमें पूरा करना है और कई नई चुनौतियां भी हैं जिनका हमें सामना करना है। परंतु हम हिन्दी के प्रयोग प्रसार की दिशा में कोई कसर छोड़ना नहीं चाहते।

मैं इस हिन्दी दिवस के पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ। हिन्दी दिवस के इस गौरवपूर्ण क्षण में मैं हमेशा गतिमान रहने वाले अपने रेल परिवार के सजग अधिकारियों/कर्मचारियों का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ जिनके परिश्रम के कारण हम सुरक्षित और सफल परिचालन करने में सक्षम हैं। मैं इस अवसर पर उन महान साहित्यकारों, मनीषियों और युगप्रवर्तकों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ जिनके सतत् प्रयास और समर्पण के कारण आज हमारे पास समृद्ध हिन्दी साहित्य उपलब्ध है।

मैं मालदा मंडल के सभी रेलकर्मी साथियों और उनके परिवारजनों को पुनः हिन्दी दिवस की ढेरों बधाइयां देता हूँ और यह आशा करता हूँ कि मालदा मंडल में आप सभी रेल कर्मियों का हिन्दी के प्रति योगदान दिन प्रतिदिन बढ़े और मालदा मंडल विकास के नये शिखर तक पहुंचे।

जय हिन्द जय हिन्दी।

**मोहित सिन्हा**  
(मोहित सिन्हा)

“हिंदी भाषा नही भावों की अभिव्यक्ति है,  
यह मातृभूमि पर मर मिटने की भक्ति है”।



गर्व से कहो हिंदी है हम



निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल



हिंदी

राष्ट्रीय व्यवहार में  
हिंदी को काम में लाना  
देश की एकता  
और उन्नति के लिए  
आवश्यक है।

—महात्मा गांधी

हिंदी दिवस

एकता ही है देश का बल,  
जरूरी है हिंदी का संबल

हिन्दी एक जानदार भाषा है।  
वह जितनी बढ़ेगी,  
देश का उतना ही नाम होगा।

जवाहर लाल नेहरू



**विजय कुमार साहू**  
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी  
एवं  
अपर मंडल रेल प्रबंधक  
पूर्व रेलवे/ मालदा

### हिन्दी दिवस संदेश

**मेरे रेलकर्मों साथियो!**

दुनिया के सभी विकसित एवं विकासशील देश अपनी भाषा में कार्य कर ही उन्नत हुए हैं। अपनी भाषा के द्वारा ही किसी देश का उत्थान संभव है। भारतीय संविधान में हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। रेलवे के व्यापक हित में राजभाषा हिंदी के प्रति हमें और अधिक संवेदनशील होने की आवश्यकता है। रेलवे के प्रत्येक भाषायी कार्यकलाप में, पत्राचार या आवेदन में, हस्ताक्षर या टिप्पणी में, हिंदी का अधिकाधिक प्रचलन एवं प्रयोग किए जाने की आवश्यकता है। इससे हमारी हिंदी समुन्नत होगी।

जहां तक सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की बात है, उसमें शब्दों के चयन में, प्रचलित शब्दों का प्रयोग तथा तकनीकी शब्दों को यथारूप रखना हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देगा। आवश्यक होने पर प्रशासनिक शब्दावली के शब्दों को ग्रहण करना उचित होगा।

हिंदी को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए कंप्यूटर एवं संचार माध्यम में इसे पूरी तरह शामिल करना आवश्यक है। मुझे पूरा विश्वास है कि अपने सामूहिक प्रयासों से हम अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे और अपने प्रयत्नों से हिंदी को नया आयाम दे पाएंगे।

मालदा मंडल संघ की राजभाषा हिंदी को पूरी तरह लागू करने के लिए कटिबद्ध है। मंडल के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध करता हूं कि वह राजभाषा में व्यक्तिगत रुचि लेकर और हिंदी में कार्यालयीन कार्य करके अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें। यह हमारे गौरव को चार चांद लगा देगा।

**जय हिन्दी,**

  
(विजय कुमार साहू)

## विषय वस्तु

प्रसंगवश—

|                          |    |
|--------------------------|----|
| —सुधांशु कुमार विश्वास — | 3  |
| मेरी गलती —              |    |
| — संदीप पाण्डेय          | 7  |
| विपणन एवं हिन्दी—        |    |
| — सुप्रिया आर            | 11 |
| चुटकुले ...—             |    |
| — जीवन कृष्ण राय         | 12 |
| वेब मीडिया में हिन्दी    |    |
| — विनोद कुमार त्रिपाठी   | 13 |
| भारतेंदु हरिश्चंद्र... — |    |
| — कैलाश चंद्र धारिया     | 15 |
| दमा का यौगिक इलाज        |    |
| जनार्दन प्रसाद           | 16 |
| हिन्दी करे मनुहार..      |    |
| — प्रकाश रंजन            | 17 |
| हिन्दी को अपनाना है      |    |
| — पूजा कुमारी            | 17 |
| 21 सदी के बच्चे          |    |
| —अशोक आशीष               | 18 |
| हिन्दी हिन्दुस्तान की    |    |
| — विनय कुमार झा          | 18 |
| छाया चित्र               | 19 |
| चित्र विथिका             | 20 |

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं  
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

## संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम  
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय  
पूर्व रेलवे/मालदा  
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)  
Email – rajbhasha.malda@gmail.com

# जन जन की भाषा हिन्दी

विश्व में सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा हिन्दी आज अपने देश में ही महत्व खोती नजर आ रही है। हमें इसके लिए प्रचार-प्रसार करने की जरूरत है। भारत में हिन्दी जन-जन की भाषा है। यह राष्ट्रीय एकता की महत्वपूर्ण कड़ी और दिलों को जोड़ने वाली भाषा है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में भाषा की भूमिका अहम होती है। इसके द्वारा ही राज्य और देश का विकास होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी निरंतर प्रगति कर रही है। आज हिन्दी भारत में ही नहीं, विदेशों में भी बोली जा रही है जिससे अपने देश की पहचान बनती है। हिन्दी की लोकप्रियता का मूल कारण उसकी सहजता और सरलता है। संविधान सभा ने हिन्दी को ही देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था।

हिन्दी अपने उद्भव काल से ही विभिन्न प्रदेशों की संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होने लगी थी। मुगल शासन के दिनों में फारसी बेशक राजभाषा बनी रही, किंतु शासकों के महलों में हिन्दी ही बोलचाल की भाषा थी। डा. रामविलास शर्मा के अनुसार अकबर के महल में बोलचाल की भाषा हिन्दी थी। जब औरंगजेब ने शाहजहां को जेल में डाल दिया तब शाहजहां ने अपना दुःख एक हिन्दी सवैये में व्यक्त किया था। जो इस प्रकार है:-  
**जन्मत ही लख दान दियो, अरु नाम रख्यो नवरंग बिहारी।  
बालहि सो प्रतिपाल कियो, अरु देस मुलुक्क दियौ बल भारी॥  
सो सुत बेर बुझे मन में, धरि हाथ दियो बंध सार में डारी॥**

अंग्रेजी हुकूमत स्थापित हो जाने के बाद अंग्रेज अफसर हिन्दी सीखते थे ताकि वे आम लोगों से सम्पर्क स्थापित कर सकें। दिल्ली के असिस्टेंट रेजीडेंट मैटाकाफ ने भी हिन्दी सीखी थी और उसने अपने गुरु गिलक्राइस्ट को पत्र लिखकर सूचित किया था कि वह भारत में जहां कहीं भी गया, हिन्दी की जानकारी होने के कारण उसे लोगों से संपर्क स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारत में हिन्दी ही वैसी भाषा जो जन जन के द्वारा स्वीकृत है।

— सुधांशु कुमार विश्वास

## निःशुल्क वितरण हेतु

| संरक्षक                          | परामर्श                                                                  | प्रधान संपादक                                   | संपादक                   | कार्यकारी संपादक                 | सहयोग                             |
|----------------------------------|--------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------|--------------------------|----------------------------------|-----------------------------------|
| मोहित सिन्हा<br>मंडल रेल प्रबंधक | विजय कुमार साहू<br>अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी<br>एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक | सुधांशु कुमार विश्वास<br>राजभाषा अधिकारी(प्रा.) | सच्चिदानंद<br>व. अनुवादक | कैलाश चंद्र धारिया<br>व. अनुवादक | इंद्र ज्योति राय एवं<br>दयामय दास |

# मेरी गलती

“मां! कल मैं पिकनिक के लिए जा रहा हूँ।”

“मैंने कभी तुमको कहीं जाने से रोका है क्या? अरे पगले! मैं तो हमेशा ही तुम्हें हंसते-खेलते देखना चाहती हूँ। मेरी तो भगवान से एक ही प्रार्थना है कि तुम यूँ ही हमेशा हंसते-खेलते रहो। मां ने अपने बेटे की बलइयाँ लेते हुए कहा और खुद ही उसका सामान पैक करने लगी।”

“बेटा, चंदर!”

“अब क्या हुआ मां?”

“कब तक लौटोगे?”

“मां, मैं पंद्रह दिन बाद लौटूँगा।” जाते-जाते चंदर ने पीछे मुड़ कर अपनी मां राधिका देवी से कहा और फिर तेजी से सड़क की ओर चला गया।

चंदर और उसके दफ्तर के सभी साथी घूमने में मशगूल एक दूसरे के साथ पिकनिक का लुफ्त लेने में मस्त थे। उन सबों के साथ ही चंदर भी था। कुछ देर तक तो सभी एक साथ थे। पर घूमने की धुन में मस्त चंदर अपने साथ आए दोस्तों से अलग हो गया।

सहसा एक जोरों की चीख सुनाई दी।

“बचाओ ! बचाओ !”

चीख सुनकर सभी उस ओर दौड़ पड़े जिधर से आवाज आई थी।

वह चीख किसी और की नहीं बल्कि हसीन वादियों का लुफ्त ले रहे चंदर की थी। जब तक वे लोग चंदर के लिए कुछ कर पाते तब तक चंदर का पैर एक चट्टान की ऊँचाई से फिसला और देखते ही देखते वह एक गहरी झील में जा गिरा।

ऐसी भयावह स्थिति को देखकर कुछ तो हक्के-बक्के रह गए और कुछ नीचे झील के तरफ दौड़ पड़े। उसके साथ आये साथियों ने उसे उस झील से काफी कठिनाई के बाद बाहर निकाला और शहर के एक अस्पताल में ले गये। उन लोगों का पिकनिक मनाने का हौसला पूरी तरह खत्म हो चुका था, साथ ही एक नई मुसीबत भी आ पड़ी थी।

लगभग एक सप्ताह बाद डॉक्टरों ने चंदर को अस्पताल से रिहा कर दिया। वह भला-चंगा होकर अपने साथियों के साथ घर वापस आ गया।

अस्पताल से रिहा होते वक्त डॉक्टर ने चंदर और उसके दोस्त प्रेम को कुछ सलाह दी। डॉक्टर की बातों को सुनते ही चंदर जैसे रो सा पड़ा।

“ये क्या हो गया प्रेम?”

“होनी को कौन टाल सकता है दोस्त। अब जो होना था सो हो चुका। सोचने से क्या फायदा?”

फिर सब कुछ सामान्य हो गया और चंदर पुनः अपने ऑफिस जाने लगा।

“बेटा, आज जरा जल्दी आना।”

“क्या बात है मां, जो आज जल्दी आना पड़ेगा?”

“बेटे! तेरे पिता ने रामपुर के रघुवीर लाल की बेटी सुधा के साथ तेरी शादी तय कर दी है। वे लोग तुम्हें देखने आज ही घर आ रहे हैं।”

“नहीं मां! मैं अभी शादी नहीं करूंगा।”

“तेरे न करने से क्या होता है बेटे!”

“मां, मैं कह रहा हूं न कि शादी नहीं करूंगा। अगर तुम लोगों ने जिद नहीं छोड़ी तो बाद में बहुत पछताओगी। आगे तुम्हारी मर्जी।”

चंदर के न चाहते हुए भी उसके मां-बाप ने उसकी शादी तय कर दी।

मई का एक दिन, मानो चंदर के घर में ही सारी खुशियां समा चुकी थीं। जहां देखो वहीं नायाब तोहफे, होते भी क्यों नहीं। आखिर मां-बाप का एकलौता बेटा जो था। आज उसके साथ उसका खास दोस्त प्रेम भी था। प्रेम चंदर के साथ पिकनिक पर भी गया था और उसके एक्सीडेंट के वक्त भी उसकी पूरी देखभाल उसी ने की थी।

“चंदर! इधर आना।” प्रेम ने उसे वहां खड़ी भीड़ से अलग करते हुए उसके कानों में कुछ कहा।

“प्रेम मैंने मना तो किया था पर ये लोग मानने को तैयार नहीं। अब जो हो रहा है उसे होने दो, आगे ईश्वर की मर्जी।”

“मैंने तो तुम्हारे दोस्त की हैसियत से वह बात याद दिलाई है जो डॉक्टरों ने कही थी। मैं भी चाहता हूं कि तुम सदा खुश रहो मेरे दोस्त!”

धूमधाम से शादी हुई। घर वाले काफी खुश थे। स्वयं चंदर न चाहते हुए भी खुश था। शादी के बाद सुधा दुल्हन बनकर चंदर के घर आ गई।

सुधा को कुछ आवाजें सुनाई दीं और वह वहीं ठिठक कर रुक गई। सिलाई मशीन चलाते-चलाते उसके हाथ और पैर दोनों अनायास ही रुक गये। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसके जिस्म में कोई जान ही न बची हो। आवाज उसकी सास राधिका देवी की थी। राधिका देवी अपनी पड़ोसन लक्ष्मी से बातें कर रही थीं।

“क्या कहूं लक्ष्मी बहन? मुझे नहीं लगता है कि इस घर में कोई नया चिराग जलेगा? इतने वर्ष हो गए सुधा और चंदर के ब्याह के मगर अभी तक मेरा घर एक बच्चे के लिए तरस रहा है। अब तुम ही बताओ बहन! भला इतने दिनों तक कैसे कोई मां-बाप अपने वंश को डूबते देख सकता है।”

“अरी राधिका बहन! तो आप चंदर की दूसरी शादी क्यों नहीं कर देतीं। कौन जाने भगवान की माया। दूसरी बहू से कुल को दीपक दिखाने वाला कोई अंश मिल जाए। पड़ोसन लक्ष्मी ने चंदर की मां की हां-हां में मिलाती हुई बोली।”

“क्या कहूं लक्ष्मी बहन, पता नहीं क्यों! चंदर तो दूसरी शादी के नाम से ही भड़क उठता है।”

“राधिका बहन! सुधा ने चंदर को कुछ खिला दिया है जिसकी वजह से वह हमेशा सुधा में ही खोया रहता है।”

“मुझे तो लगता है, सुधा में कोई खोट है, तभी तो वह आज तक मां नहीं बन सकी। मैंने कितनी ही बार चंदर से कहा है कि तू दूसरी शादी कर ले! मगर वह सिर्फ यही कहता है मां! क्या गारंटी है कि मैं दूसरी शादी कर लूं तो बच्चा जन्म लेगा ही। अरे हमारे उम्र के कितने लड़के तो अभी तक कुंवारे बैठे हैं। और तू है कि हर वक्त बच्चा-बच्चा की रट लगाये बैठी है। जब होना होगा, होगा।

“आज बच्चा नहीं हुआ तो बच्चे के लिए ताना मारती है! कल को अगर बच्चा हुआ और बेटे के जगह बेटी हुई तो कहेगी, अरे ये तो पराये घर की अमानत है। वंश तो बेटा से बढ़ेगा। और फिर हर रोज एक नई मुसीबत खड़ी होगी।

“आखिर मैं पूछता हूं क्या ये सब चीजें अपने बस की हैं जो तू रोज-रोज खुद अपनी निंदा औरों से कराती है। क्या वे लोग तुम्हें बच्चा दे देंगे? उल्टा ताने ही देंगे।”

इधर सुधा भी रोज-रोज अपनी सास और पड़ोसियों के ताने सुन-सुन कर अब एक बेजान सी पत्थर की मूर्ति

की तरह हो चुकी थी। सुधा की जिंदगी ठीक उसी तरह हो चुकी थी जैसे एक खिलौना चाबी देने पर चल तो सकता है पर सामने पड़ी दिवाल से अपनी हिफाजत नहीं कर सकता।

सुधा पढ़ी-लिखी और आधुनिक होते हुए भी वह बाहरी आडम्बरों से दूर एक गृहिणी की तरह अपने घर वालों का हर वक्त ख्याल रखती। हालांकि सुधा की सास राधिका बहुत ही नेक और हर किसी के साथ अच्छा व्यवहार करने वाली महिला थीं। फिर भी उसे तो बस एक ही ललक थी कि घर में एक बच्चा हो जाए! सब कुछ तो है पर एक नन्हे की किलकारी के लिए ही तो वह बेचारी तरस रही है।

सुधा सिलार्ड मशीन इसलिए नहीं चला रही थी कि उसके घर की माली हालत खराब थी, बल्कि वह अपने समय को फालतू की बातों से दूर रखने के लिए कुछ न कुछ किया करती थी।

चंदर के आते ही उसके पिता रामनाथ ने पुकारा-“चंदर! जरा इधर आना बेटा।”

“आया बाबूजी!” वह ऑफिस से आने के बाद हाथ-मुंह धोकर अपने पिता के पास जा बैठा और उसने अपने पिता से पूछा-“क्या बात है बाबूजी?”

“बेटा, मैं कह रहा था कि कब तक तुम लोग इस तरह खामोश रहोगे। मेरी मान, तू दूसरी शादी कर ले। शादी करने से सुधा का प्यार थोड़े ही न कम हो जाएगा। कौन जाने तुम्हारी दूसरी शादी के बाद सुधा भी मां बन जाए। और जहां तक मेरा ख्याल है, सुधा भी इसके लिए मना नहीं करेगी। आखिर वह भी तो इस घर की बहू है। उसका भी तो कोई फर्ज है।

“अब देखो न मनोज को, उसे भी पहली पत्नी से कोई संतान नहीं हुआ और जैसे ही उसने दूसरी शादी की, उसके घर में एक नई खुशी की लहर दौड़ पड़ी है, और तो और, उसकी पहली पत्नी ने भी एक सुंदर लड़के को जन्म दिया है।”

“नहीं पिताजी, ऐसा संभव नहीं।”

“मैं पूछता हूं, आखिर बात क्या है जो तुम शादी करने से इंकार रहे हो?”

चंदर वहां से आगे कुछ नहीं बोला और चुपचाप चला गया। पिता के पास से आने के बाद चंदर सीधे अपने कमरे में चला गया जहां सुधा पहले से ही बेजान बिस्तर पर पड़ी रो रही थी। चंदर के आते ही उसने बड़े ही कातर स्वर में कहा-“एक बात कहूं, ना तो नहीं करेंगे?”

“अरे पगली! ये आज कैसी बातें कर रही हो? मैंने कभी तेरी बातों को काटा है।”

“कितनी ही बार हमलोग डॉक्टर के पास गए। डॉक्टर ने क्या कहा यह भी आपने मुझसे नहीं कहा। बस मेरी आपसे एक ही प्रार्थना है कि आप दूसरी शादी कर लेते। मुझे कोई दुख नहीं होगा। कम से कम इस घर को एक चिराग तो मिल जाएगा और मुझे भी रोज-रोज तो इस तरह के शब्द नहीं सुनने पड़ेंगे।”

मुझे मालूम था, मां-बाबूजी की तरह तुम भी यही कहोगी। मैंने तुम से कभी कुछ कहा है इसके लिए। वक्त आएगा सब अपने आप ठीक हो जाएगा।

चंदर कहीं खो गया। वह मन ही मन सोच रहा था कि आखिर मैं क्या करूं? इसका क्या निवारण हो सकता है। अगर मैं अपनी मजबूरी घरवालों को बताता हूं तो मेरे ऊपर ही एक कलंक लग जाएगा! नहीं बताता हूं तो नाहक मैं बेचारी सुधा न जाने क्या-क्या सुनती रहती है और सुनती रहेगी। चंदर सारी रात सोचते-सोचते कब सोया और कब सुबह हुई इसकी भी उसे खबर नहीं हुई।

दूसरे दिन सुबह-सुबह चंदर को अपने यहां देखकर प्रेम ने कुछ चिंतित होते हुए पूछा-“क्या बात है चंदर? घर में सब ठीक-ठाक तो है न।”

“घर में तो सब ठीक है प्रेम!”

“फिर बात क्या है जो तू आज इतनी सुबह और वह भी उदास मन से आया है।”

“प्रेम, अब मैं तुमसे क्या कहूँ। रोज-रोज मां-बाबूजी की बस एक ही रट लगी है दूसरी शादी। मैं क्या करूँ, अब तुम ही मुझे कुछ रास्ता दिखलाओ।”

“चंदर, मैं तुम्हें क्या रास्ता दिखला सकता हूँ। अब तुम्हें जो सही लगे, करो।”

चंदर के पास अब एक मात्र विकल्प बचा था। और उसने वही करने का निर्णय लिया।

“पिताजी, मेरी पोस्टिंग कुछ दिनों के लिए गोरखपुर हो गयी है। इसलिए मैं कुल सुबह ही गोरखपुर के लिए जा रहा हूँ। जब मैं वहाँ पूरी तरह सेट हो जाऊँगा तो सुधा को ले जाऊँगा।”

चंदर के जाने के एक महीने बाद तक उसकी कोई खबर न मिलने से उसके माता-पिता और स्वयं सुधा भी घबड़ा गई।

लगभग एक महीने बाद सुधा आलमारी से अपना कोई सामान निकाल रही थी कि उसे एक पत्र मिला। वह पत्र किसी और का नहीं स्वयं चंदर ने जाते-जाते लिख छोड़ा था।

सुधा ने पत्र खोला और देखते ही चिल्ला पड़ी। सुधा के चिल्लाने की आवाज सुन कर उसके सास-ससुर उसके पास दौड़े हुए आए और पूछे-“क्या हुआ बेटी?”

“गजब हो गया मांजी!”

“ये देखिए, अपने सपूत का पत्र!”

पत्र में लिखा था।

आदरणीय पिताजी,

आप लोग हमें बार-बार दूसरी शादी के लिए प्रेरित करते रहे। मैंने अपनी पहली शादी भी केवल आपलोगों की मर्जी से ही की थी।

आपलोगों ने मुझे से पूछा तक भी नहीं और शादी की तारीख तय कर दी। उस हालत में मेरे पास एक ही विकल्प बचा था कि चुपचाप आप लोगों का कहना मान लूँ और बाकी चीजें ईश्वर पर छोड़ दूँ। अंततः वही हो रहा है जो सच है।

पिताजी सच यह है कि मैं जब पहली बार शिमला टूर पर गया था। उस वक्त एकसीडेंट में मैं जखमी हो गया था जिसे आपलोग भी जानते हैं। नहीं जानते हैं तो सिर्फ यह कि उस हादसे सदा के लिए मुझे पुरुषार्थहीन बना दिया। डाक्टरों ने आपरेशन के बाद मुझे अस्पताल से डिस्चार्ज करते वक्त जो कहा था। वह अंततः सच साबित हो गया। मैं कभी पिता नहीं बन सकता। यह बात केवल मैं और मेरा दोस्त प्रेम ही जानते हैं।

पिताजी, मेरी आपसे एक विनती है कि मेरी इस भूल के लिए आपलोग सुधा कोई कोई कष्ट नहीं देंगे। वह पूरी तरह निर्दोष है। अगर दोषी कोई है तो वह खुद मैं हूँ जो आपलोगों से उस वक्त नहीं बता सका। शायद होनी को यही मंजूर था। और हां, एक बात और लिख रहा हूँ। मैं किसी टूर पर नहीं जा रहा बल्कि मैं अब सदा के लिए इस घर और समाज को छोड़कर जा रहा हूँ। मेरे साथ जो हुआ वह मैं अब सह नहीं सकता। आपलोगों की जिद और मेरी अदूरदर्शिता के कारण एक भोली-भाली सुधा की जिंदगी बर्बाद हो गई जिसका जिम्मेवार मैं हूँ। अगर मैंने उस वक्त ही आप लोगों को सच बता दिया होता तो शायद आज यह स्थिति नहीं होती।

अतः मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी इस भूल की सजा आप लोग सुधा को नहीं देंगे और एक भूल समझ कर क्षमा कर देंगे।

आपका चंदर

यह क्या हो गया चंदर के बापू! पत्र देखते ही चंदर की मां बेहोश हो कर गिर पड़ी

— संदीप पाण्डेय

# विपणन और हिंदी

**14** सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। सितंबर के महीने को हिंदी का महीना कहा जाता। सन 1949 ईस्वी को 14 सितंबर को हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता मिली। प्रत्येक सरकारी कार्यालय में हिंदी सप्ताह या हिंदी पखवाड़ा बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। सरकारी दफ्तरों में तमाम लोग हिंदी के काम को व्यक्तिगत प्रयास से और बड़े उत्साह के साथ करते हैं। पूरा सरकारी कार्यालय इन 15 दिनों में हिंदीमय हो जाता है। आज के वैश्विक युग में पूरे भारतवर्ष में हिंदी का प्रचार और प्रचार बढ़ा है तथा इसकी स्वीकार्यता बढ़ी है।

अब दक्षिण भारत में भी हिंदी का पहले जैसा विरोध नहीं होता है। दक्षिण के लोगों को समझ में आ गया है कि बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए हिंदी का ज्ञान भी जरूरी है। इसीलिए नहीं कि हिंदी में काम करना है बल्कि हिंदी इलाके में नौकरी करनी है तो वहां का ज्ञान होना ही चाहिए। हिंदी की जानकारी होने से एक फायदा यह होता है कि किसी तीसरी भाषा के इलाके में अगर जाएं वहां अंग्रेजी जानने वाला न भी मिले तो हिंदी जानने वाले की मदद मिल जाती है।

हिंदी की कुछ अपनी विशेषताएं हैं जो उसे दूसरी भारतीय भाषाओं से अलग बनाती है। एक है उनकी बोलियों की विविधता। अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी, हरियाणवी, गढ़वाली, कुमाऊनी और हिमाचल जैसी अनेक बोलियां हैं जो हिंदी पट्टी में हिंदी की विविधता को पेश करती है,

यह बोलियां हिंदी को सभी इलाकों से धागे के समान जोड़ने का काम करती है। सिनेमा, टेलीविजन, समाचार और मनोरंजन चैनलों की वजह से हिंदी का व्यापक विस्तार हुआ है। हिंदी का यह तार उसे एक धरातल ऊपर तक लेकर गया है। बोलने, संपर्क करने, बाजार से सामान या सेवा खरीदने, मनोरंजन और सरकारी भाषा होने के कारण हिंदी के कई रूप विकसित होते गए हैं। एक हिंदी है आम बाजार की भाषा और एक है मनोरंजन यानी सिनेमा म्यूजिक खेल की भाषा हिंदी।

इसके अलावे सरकारी कामकाज यानी राजभाषा हिंदी है जो विचार दर्शन और अकादमिक हिंदी के करीब है परंतु अपनी शब्दावली और मानकीकरण के कारण आम बाजार की हिंदी और मनोरंजन की हिंदी से कुछ अलग तरह की है। हिंदी का इस्तेमाल हम जिन कामों के लिए करते हैं और उसके लिए जिस प्रकार की हिंदी की जरूरत है वर्तमान परिपेक्ष्य में वह आसानी से उपलब्ध है। परंतु कभी-कभी सरकारी कामकाज में हिंदी के कठिन शब्दों का प्रयोग हिंदी की सरलता को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए किसी बात को संज्ञान में लाना के स्थान पर जानकारी में लाना अधिक सरल है और हर प्रकार से यह बेहतर शब्द है जिससे एक आम जनमानस अपने आपको जोड़ पाता है।

किसी भी भाषा का विकास उसे उपयोग करने वाले पर निर्भर करता है। हिंदी का विकास करने की जिम्मेवारी किसकी है इसका सीधे-सीधे उत्तर मिलना बड़ा कठिन है। आज वस्तुतः देखा जाए तो हिंदी का विकास बाजार के माध्यम से हो रहा है। आज बाजार में हिंदी की महत्ता को स्वीकार कर लिया है और व्यापार में वृद्धि और बाजार के विस्तार के लिए उसने हिंदी को अपनाया है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपनी विस्तारवादी नीति के प्रमुख घटकों में हिंदी के माध्यम से विपणन को प्रमुखता दे रही हैं। वह ऐसा इसलिए नहीं कर रही हैं कि उन्हें हिंदी से प्रेम है बल्कि उनका हिन्दी प्रेम शुद्ध रूप से व्यापार और उससे होने वाले मुनाफे से जुड़ा हुआ है। विभिन्न संचार माध्यमों पर प्रसारित होने वाले विज्ञापनों पर अगर नजर डाली जाए तो यह देखा जाएगा कि लगभग दो तिहाई से अधिक विज्ञापनों की भाषा हिंदी है। न सिर्फ विज्ञापन बल्कि बड़े-बड़े चिकित्सालय एवं विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रचार की भाषा चाहे वह प्रचार संवाद माध्यम से हो, दृश्य माध्यम से हो या प्रिंट माध्यम से हो आज हिंदी है।

आजकल टेलीविजन पर खेलों का प्रसारण में कमेंट्री भी हिंदी माध्यम से की जाती है। इसके पीछे मीडिया हाउसों का उद्देश्य अधिक से अधिक जनमानस को उस विशेष चैनल की तरफ आकर्षित करना है और अगर वह ऐसा करते हैं तो इसमें उनकी व्यापार नीति शामिल है। टेलिविजन वाले अक्सर हिन्दी के विज्ञापनों को रोमन अक्षरों में दिखाते हैं जैसे yeh under ki bat hai।

सन 1992 के बाद भारत के बाजारों को वैश्वीकरण के तहत खोल दिया गया। विदेशी कंपनियों ने आरंभ में अपना व्यापार का माध्यम अंग्रेजी को बनाया, लेकिन उन्हें यह समझने में देर न लगी कि भारत जैसे बहुभाषिक राष्ट्र में अगर व्यापार करना है और यहां से मुनाफा कमाना है तो व्यापार की भाषा के रूप में हिंदी को अपनाना ही होगा। इसकी वजह से कई बड़े अधिकारियों ने भारत में शासन करने के लिए हिन्दी को सीखा।

इतना ही नहीं इसको ध्यान में रखते हुए विभिन्न बड़ी-बड़ी कंपनियों ने अपनी विपणन नीति में हिंदी को प्रमुखता से जगह दी है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक, पेप्सी, कोका कोला, आईबीएम, इंफोसिस, विप्रो जैसी विभिन्न कंपनियों ने हिंदी माध्यम से ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करना शुरू किया है। आज अमेरिका की कंपनी होते हुए भी गूगल अधिकतर भारतीय भाषाओं में सर्च के विकल्प उपलब्ध करा रही है। यह हिंदी की शक्ति का प्रभाव है कि बाजार को हिंदी के आगे झुकना पड़ा।

आज हिंदी को आसान बनाने की आवश्यकता है। हिंदी को आसान बनाने के लिए अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को हिंदी में लाया जा रहा है। अंग्रेजी के शब्द हिंदी में सरलता से लोगों की जबान पर चढ़ते जा रहे हैं। बर्गर, पिज्जा, कंप्यूटर, सर्फिंग, पेन ड्राइव, मोबाइल फोन, ट्रेन, आदि शब्दों की लंबी फेहरिस्त है जिन्हें अंग्रेजी से लाकर हिंदी में शामिल किया जा रहा है।

अब वह दिन दूर नहीं जब पूरे भारत में हिंदी माध्यम से विपणन, प्रेषण, व्यापार, संवाद पूर्ण रूप से संपन्न होंगे और बाजार की बदौलत ही हिंदी भारत की वास्तविक राजभाषा साबित होगी।

— सुप्रिया आर

## चुटकुले

पापा : बेटा, आज तुम स्कूल क्यों नहीं गए?

बेटा : आज मेरी टीचर का बर्थ डे है। इसलिए मैंने गैरहाजिर रह कर उनको राहत की सांस लेने का मौका देना उचित समझा।

000

शेखर शेखी बघार रहा था : कल मैंने अपनी बहन को घुटनों के बल चलने को मजबूर कर दिया।

रमेश : तुमने उसको बहुत मारा था क्या?

शेखर : नहीं, ऐसी बात नहीं है। वह पलंग और सोफों के नीचे झांक-झांक कर कह रही थी--निकल चूहे, कहां छिपा है तू!

000

राजू : एक ऐसा काम है, जो दुनिया में सिर्फ मैं ही कर सकता हूं, और कोई नहीं।

रामू : ऐसा कौन सा काम है?

राजू : अपनी हैंड राइटिंग में ही पढ़ सकता हूं।

000

छेदी : पिछले हफ्ते मेरे दसवें भाई का जन्म हुआ।

मोचन : दसवां? क्या नाम रखा है उसका?

छेदी : पहले तो हम उसे गोपी कहते रहे, पर हफ्ते भर बाद मालूम पड़ा कि यह नाम तो पहले से एक भाई का है। अब हम नया नाम खोज रहे हैं।

000

एक चौराहे पर कुछ मनचले खड़े थे। कुछ लड़कियां वहां से गुजरीं तो एक ने कहा--“मैंने इन्हें देखा है एंगल बदल-बदल के!”

एक लड़की ने तुरंत जवाब दिया--“मैंने इन्हें मारा है सेंडल बदल-बदल के!” — जीवन कृष्ण राय

# वेब मीडिया में हिन्दी

आज के प्रौद्योगिकी के दौर में मीडिया एक शक्तिशाली माध्यम है और उसमें भी वेब मीडिया के प्रति लोगों का आकर्षण प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। भूमंडलीकरण के दौर में मीडिया का दायरा काफी विस्तृत हो चुका है, ऐसे में विभिन्न भाषाओं का विकास भी वेब मीडिया के तहत ही हो रहा है। आज की स्थिति में वेब और भाषा एक दूसरे के अहम सहयोगी माने जा सकते हैं।

भारत जैसे विशाल देश में जहाँ व्यापक क्षेत्र में हिंदी बोली जाती है वहाँ इसके विकास में वेब मीडिया के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। यह सच है कि वेब के असर से हिंदी के स्वरूप में इसके मूल स्वरूप से भिन्नता उत्पन्न हुई है लेकिन यह भिन्नता ही इसके विकास के पहियें हैं। हिंदी अपने आप में व्यापक है और वेब मीडिया के प्रयोगों के बावजूद इसके अस्तित्व पर कोई संकट नहीं है। दूसरी भाषाओं के कुछ शब्दों के प्रयोग से ही हिंदी वेब के लायक बनी अन्यथा अपने मूल स्वरूप में हिंदी एक दायरे तक सीमित होकर रह जाती।

यूँ तो 80 के दशक में ही हिंदी को कंप्यूटर की भाषा बनाने का प्रयास शुरू हो चुका था परन्तु वेब के साथ हिंदी का प्रयोग 20 वीं सदी के समाप्ति के बाद शुरू हुआ। सन 2000 ई. में यूनिकोड के पदार्पण के बाद 2003 में सर्वप्रथम हिंदी में इंटरनेट सर्च और ई मेल की सुविधा की शुरुआत हुई। हिंदी के विकास में यह एक मील का पत्थर साबित हुआ। 21वीं सदी के पहले दशक में ही गूगल न्यूज, गूगल ट्रांसलेट तथा ऑनलाइन फोनेटिक टाइपिंग जैसे औजारों ने वेब की दुनिया में हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण सहायता की।

उपरोक्त सभी ऑनलाइन औजार यूँ तो प्रत्यक्षतः कोई बड़ी भूमिका भले ही न निभाते हो परन्तु हिंदी के समग्र विकास में इनकी सहायता से इंकार नहीं किया जा सकता है। भारत जैसे देश में जहाँ महज 10 प्रतिशत से भी कम लोग अंग्रेजी का ज्ञान रखते हैं, वहाँ हिंदी के इस स्वरूप की आवश्यकता बढ़ जाती है।

वेब मीडिया आज सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम बन चुका है। या फिर हम कह सकते हैं कि वेब मीडिया एक ऐसा गुरुकुल है जहाँ प्रत्येक भाषा एक संकाय की भांति प्रतीत होती है। इलेक्ट्रॉनिक संचार – माध्यम और कंप्यूटर आदि के उपयोग में हिंदी ने अपनी जगह बना ली है। इससे एक तरफ इन माध्यमों से हिंदी का प्रसार हो रहा है, तो दूसरी तरफ हिंदी का अपना बाजार भी बन रहा है। इससे हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका मजबूत हो रही है।

आलोक कुमार के ‘नौ दो ग्यारह’ नाम के हिंदी के पहले ब्लॉग से श्रीगणेश के बाद आज हजारों की संख्या में हिंदी ब्लॉग वेब में मौजूद हैं। अपनी अभिव्यक्ति को अपनी भाषा में प्रदर्शित करने का सुख वेब मीडिया में ब्लॉगिंग के माध्यम से प्राप्त होता है। आज जबकि वर्डप्रेस जैसे ढेरों ऐसे मंच उपलब्ध हैं जहाँ हम अपनी बात बेहद स्पष्ट व विस्तृत रूप से रख सकते हैं। यहाँ स्पष्टता से मतलब भाषीय स्वतंत्रता से है। हिंदी के विकास में ब्लॉगिंग ने निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है, इसका प्रमाण यह है कि हिंदी के कई ऐसे ब्लॉग हैं जो रोजाना कई हजार लोगों से भी ज्यादा व्यक्तियों द्वारा देखे जाते हैं और यह कोई सामान्य बात नहीं है।

हिंदी भाषा में कही बात यदि अंग्रेजी अनुवाद में कही जाय तो यह निश्चित है कि इसकी स्पष्टता में कम से कम बीस फीसदी की कमी जरूर आयेगी। शैली तथा वैचारिक रूप से अलग अलग ये ब्लॉग अपनी भाषायी खुशबू को प्रतिदिन हजारों जनमानस तक पहुंचाते हैं। किसी भाषा के विकास व उत्थान के लिए इससे बेहतर क्या हो सकता है।

वेब मीडिया के आने से पूर्व सभी कृतिकारों को अपनी बात आम जनमानस तक पहुंचाने में अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। ढेरों प्रयास के बावजूद भी वे अपनी कृति को एक सीमित दायरे तक ही पहुंचा पाते थे। वेब मीडिया ने इन सभी सीमाओं को तोड़ा है। आज सभी लेखक गुमनामी की कालिमा को इस माध्यम के प्रकाश की सहायता से खत्म करने में सक्षम हो गये हैं।

इंटरनेट पर हिंदी में खोज आने के बाद हमारी मूल जिज्ञासा का जवाब हिंदी में ही पलक झपकते हमारे सामने होता है, और ये सब इसी लिए सम्भव हुआ है क्योंकि इंटरनेट के सागर में नित प्रतिदिन हिंदी ज्ञान स्वरूपी नदियाँ समाहित हो रही हैं और इसी प्रक्रिया का परिणाम हुआ कि आज भारत से बाहर सात समन्दर पार भी हिंदी सभाएं एवं गोष्ठियां, सम्मेलन, पुरस्कार समारोह आदि आयोजित किये जा रहे हैं।

भारत की भाषायी स्थिति और उसमें हिंदी के स्थान को देखने के बाद यह स्पष्ट है कि हिंदी आज भारतीय जनमानस के सम्पर्क की राष्ट्रीय भाषा है। संख्या की दृष्टि से दुनिया की इस तीसरी सबसे बड़ी भाषा के जानने वालों की यह विशाल जनसंख्या हिंदी के अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क का साक्षात्कार कराती है क्योंकि आज दुनिया के हर कोने में बसे भारतीय वेब मीडिया की सहायता से हिंदी को महत्व देना शुरू कर चुके हैं।

उपर्युक्त तथ्यों और बातों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वेब मीडिया ने हिंदी समेत सभी भाषाओं को एक सामान वैश्विक मंच प्रदान किया है। चूँकि हिंदी की अपनी विशेषताएं हैं इसलिए हिंदी अन्य भाषाओं से तेज व सकारात्मक रूप से विकास की गति पर आगे बढ़ रही है।

— विनोद कुमार त्रिपाठी

स्याही से लिख दो, आज तुम अपना वर्तमान  
हिंदी हो तुम, हिंदी से सीखो करना प्यार  
**हिंदी अपनाकर देश का मान बढ़ाएँ**



## भारतेंदु हरिश्चंद्र: हिंदी के शिल्पकार



भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर सोमवार 1850 ईसवीं को हुआ था। उनके पिता गोपालदास तथा माता पार्वती देवी थी। गोपालदास कौशिक एक प्रतिष्ठित परिवार से थे। वह एक अच्छे कवि तथा लेखक तथा गिरधर दास उपनाम से कविता लिखा करते थे। उन्होंने 40 से अधिक ग्रंथ लिखे। हरिश्चंद्र को लक्ष्मी तथा सरस्वती दोनों अपने पिता से प्राप्त हुई वह अपने योग्य पिता के सुयोग्य संतान थे।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई वह दो 3 वर्ष तक विंस कॉलेज में भी पढ़े। हिंदी अंग्रेजी पढ़ाने के लिए शिक्षक उनके घर पर ही आते थे। आगे चलकर उन्होंने मराठी, गुजराती, बंगाली, मारवाड़ी, पंजाबी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि का ज्ञान स्वयं प्राप्त किया। वह कई भाषाओं के ज्ञाता थे।

13 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह लाला गुलाब राय की सुपुत्री मन्नू देवी से हुआ। सन 1922 ईस्वी में हुए अपने परिवार के साथ जगन्नाथ धाम की यात्रा पर गए। इस यात्रा में उन्हें बंगाल के साहित्य के बारे में काफी जानकारी हुई। इसके बाद उन्होंने भारत के विभिन्न प्रदेशों की यात्राएं की और इन यात्राओं से उन्हें देश की वर्तमान अवस्था की जानकारी प्राप्त हुई।

उन्होंने साहित्य की मुक्त हस्त से सेवा की। उनकी दानशीलता प्रसिद्ध थी। इस कारण उनकी काफी संपत्ति उनके हाथ से निकल गए और उनके ऊपर कर्ज हो गया। आर्थिक कष्ट से उनका शरीर शिथिल हो गया और उन्हें क्षय रोग हो गया। 6 जनवरी, 1885 ईस्वी को साहित्य का यह उज्ज्वल नक्षत्र सदा के लिए अस्त हो गया। वह केवल 34 वर्ष जीवित रहे और इतने अल्प काल में शायद ही किसी अन्य व्यक्ति ने इतना बड़ा साहित्यिक कार्य किया हो जैसा भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किया।

भारतेंदु भाषा के प्रेमी थे। वह निज भाषा की उन्नति में देश का कल्याण समझते थे। वह भाषा के क्षेत्र में बहुत ज्यादा प्रयोग के पक्ष में नहीं थे। वह सीधी सरल भाषा के पक्षपाती थे। उनका लक्ष्य हिंदी भाषा का भारतीय जनता में प्रचार करना और हिंदी गद्य साहित्य के विभिन्न अंगों का विकास करना था। उन्होंने खड़ी बोली का समर्थन किया। नई हिंदी के निर्माण में उन्होंने बोलचाल की उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत एवं अंग्रेजी के सभी प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया। उनकी भाषा उनके पात्रों के अनुकूल थी। उन्होंने मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियां चुटीले ढंग से प्रयोग किया।

भारतेंदु से पहले का साहित्य भक्ति रस में डूबा फिर श्रृंगार रस की धारा में ओतप्रोत हो गया था। उसमें आम जनता को जागृत करने की शक्ति विलुप्त हो चुकी थी। कविता केवल बुद्धि विलास का साधन मात्र रह गयी थी। उन्होंने काव्य को फिर से भक्ति की धारा से जुड़ने का प्रयास किया तथा लोकजीवन के आमने सामने खड़ा कर दिया। हिंदी के लिए उन्होंने दो कार्य किये— 1. हिंदी भाषा का प्रचार और 2 हिंदी साहित्य में जन जीवन की समस्याओं का चित्रण।

निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल ॥

इन दोनों का कार्य करने के लिए उन्होंने दो विधियों का सहारा लिया। हिंदी भाषा का प्रचार करने के लिए समाचार पत्र निकाले। हिंदी साहित्य के उत्थान के लिए जीवन के नए मूल्यों के अनुकूल उपन्यास, नाटक, निबंध, इतिहास, पौराणिक आख्यान, लोकगीत आदि की रचना की। रंगमंच की स्थापना की और कई नाटकों का सफल आयोजन किया।

— कैलाश चंद्र धारिया

# दमा का यौगिक उपचार



दमा- श्वसन नलिकाओं का संकुचन इस रोग का प्रमुख कारण है। इसमें कफ अधिक निकलने के कारण वायु मार्ग अवरूद्ध होता है जिससे सांस लेने और छोड़ते समय बहुत जोर लगाना पड़ता है और कष्ट होता है। जो बाद में दम फूलने के रूप में परिलक्षित होता है। स्नायु दुर्बलता एवं दमा एक दूसरे से गहरा संबंध रखते हैं। इस रोग में श्वसन नलिकाओं का संकुचन होने से एवं नासिका छिद्र अवरूद्ध होने से रोगी मुंह से सांस क्रिया करता है और श्वसन में जोर लगाने के कारण हांफना शुरू कर देता है।

**दमा के कारण**—आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसके चार कारण बताए गए हैं।

1. तनाव—तनाव योग के दृष्टिकोण से अप्राकृतिक जीवनयापन के कारण उत्पन्न होता है अतः जीवन को प्राकृतिक रूप से जीना चाहिए जिससे तनाव से दूर रहा जा सके।
2. एलर्जी एवं उत्तेजना - किसी विशेष चीज के सेवन, गंध और स्पर्श से उत्पन्न होती है। एलर्जी एवं उत्तेजना को अस्वाभाविक शारीरिक रासायनिक प्रतिक्रिया कहते हैं जो ज्यादातर लोगों के लिए निरापद है।
3. वंशानुगत -वंशानुगत दम्मा में वंशानुगत कारण का ज्यादा पता नहीं चला है परंतु इससे इन्कार के कारण भी नहीं है। इस पर और कुछ करना बाकी है। हमारे जीवन पर वंशानुगत का प्रभाव पड़ता ही है इससे दूर भी किया जा सकता है।

## औषधि

दमा को दबाने के लिए आधुनिक युग में अनेक औषधियां हैं परंतु मूल से खत्म करने के लिए कारगर दवाएं अभी भी नहीं हैं। पर आप योगिक उपचार से इसे जड़ से नष्ट कर सकते हैं। यौगिक चिकित्सा का प्रथम उद्देश्य रोगी को योग का अभ्यास द्वारा रोग पर काबू पाने की स्वयं की क्षमता पर विश्वास कराना होता है और औषधियों पर धीरे-धीरे निर्भरता को खत्म करना होता है। यौगिक उपचार शुरू होने पर बिना निर्देशन के पहले से चल रही दवाओं को बंद नहीं करना चाहिए, इनको धीरे-धीरे कम करें और निर्देशन के बाद ही छोड़ें। यौगिक उपचार के का प्रथम उद्देश्य शक्ति विहीनता से छुटकारा दिलाकर प्राण ऊर्जा को मुक्त कर नाड़ियों को पुनर्जीवित करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति षट्क्रियाओं, आसन एवं प्राणायाम के अभ्यास के माध्यम से किया जा सकता है। दमा के उपचार के लिए निम्नलिखित यौगिक उपचार किया जा सकता है

1. षट्कर्म - षट्कर्मों का उपयोग शरीर में त्रिदोष - वात पित्त और कफ को संतुलित करने के लिए किया जाता है। इसलिए दमा के यौगिक उपचार में षट्कर्मों की बहुत अहमियत है। क. कुंजल क्रिया ख. नेति - इससे नासिका प्रदेश के शुद्धिकरण किया जाता है। इसमें सूत्र (केथतर ) नीति एवं जलनेति किया जाता है। ग. शंखप्रक्षालन
2. सूर्य नमस्कार 3. आसन - मार्जारि आसन, शशांकासन, शशांक भुजंगासन, भुजंगासन, धनुरासन, प्रणामासन, सर्वांगासन, पश्चिमोत्तासन, योग मुद्रा, अर्धमत्स्येन्द्रासन, गोमुखासन, मत्स्यासन, जानुशीर्षासन, हस्तोतानासन, श्वासन, मकरासन आदि योगासन करें। 4. प्राणायाम - नाडी शोधन, प्राणायाम, भ्रामरी प्राणायाम, भ्रस्तिका प्राणायाम, कपालभाति प्राणायाम करना चाहिए। 5. विश्रांति -दमा से दीर्घकालीन मुक्ति के लिए सर्वोत्तम विधि योग निद्रा है। इस योग निद्रा के योगाभ्यास के बाद रोगी अपने शरीर को शिथिल कर पाता है।

**भोजन** - सादा पोषण एवं गैर उत्तेजनात्मक भोजन करें जिसमें अधिक मात्रा में फल, उबली सब्जियां, अंकुरित अनाज एवं दाल का सेवन करें। ज्यादा मसालेदार तेल युक्त भोजन का त्याग करें। इसमें काली मिर्च लहसुन अदरक लेने की सलाह दी जाती है। सर्दी से बचे, उपवास करें या शाम भोजन छोड़ सकते हैं और उसके स्थान पर जड़ी बूटी युक्त काढ़ा ले सकते हैं। आसनों एवं षट्कर्मों से आपको कब्ज से मुक्ति मिलती है जो दमा को ठीक होने में बहुत ही फायदा पहुंचाता है यानी कब्ज से मुक्ति -- रोगों से मुक्ति

— जनार्दन प्रसाद

## हिंदी करे मनुहार...

हिंदुस्तान की भाषा है हिंदी !  
सम्मान की एक गाथा है हिंदी !!  
जन जन के मुख में बसती थी हिंदी !  
सारे काम काज में भी होती थी हिंदी!!

हिंदी ने ही स्वतंत्रता की अलख जलाई !  
आजादी का भी दर्श कराई !!  
हिंदी ने जोड़ा था देश को !  
विकास मार्ग पर मोड़ा था देश को !!

हिंदी थी जीवन रेखा देश का !  
ये थी जैसे परिभाषा देश का !!  
हिंदी हो रही उपेक्षित देश में!  
इसका हो रहा क्षयण विकृत वेश में !!

हिंदी है गरीब, पिछड़ों की भाषा!  
आती समझ सबको, कोई न दे पाए झांसा!!  
भाषा नहीं भाव है हिंदी !  
सागर पार कराने की नाव है हिंदी !!

महादेवी, पन्त, हरिवंश, निराला,  
सुभद्रा जैसे अनेकानेक कवियों की भाषा है हिंदी!  
साहित्यिक गागर में सागर भारती है हिंदी!!  
निज देश में ही दबी, कुचली गयी है हिंदी !  
कहने को ही सिर्फ रह गयी है भारत की बिंदी !!

हिंदी नहीं शर्म तुम्हारा !  
गर्व करो ये शान है हमारा !!  
अंग्रेजी अंग्रेजी कर कितना भी कर लो इसका अपमान!  
हिंदी तो रहेगी हम सबके दिल में मेरी जान !!

पर अपना तो हक मांगे है हिंदी !!  
संवरने दो, निखरने दो फिर से एक बार !  
धरोहर है ये, फिर से दे दो हिंदी को अधिकार !!

रख लो मान हिन्द देश का !  
लौटाओ हिंदी की शान,  
उसकी गरिमामयी पहचान !!  
— प्रकाश रंजन

## हिन्दी को अपनाना है

सबसे पहले खुद अपनाना है  
फिर सब को समझाना है  
हिंदी अपनी भाषा है  
इससे सबको आशा है

हिंदी सबकी प्यारी है  
हर भाषा से न्यारी है  
सब ने इसको पहचाना है  
इसके वर्चस्व को माना है

विश्व बाजार में छाई है  
हिंदी रौनक लाई है  
बिन इसके व्यापार अधूरा  
इसकी संगत से सब पूरा

यही संदेश बिखराना है  
हिंदी को अपनाना है

—पूजा कुमारी

## 21वीं सदी के बच्चे

समय के बेतरतीब पल से  
चुन लाता हूँ/कुछ कतरने  
बीते हुए लम्हों के/जैसे चुन लाती है  
जुगत और जतन से/तिनकों को बयां  
घोसले की खातिर

ठीक वैसे ही/चुन लाते हैं बच्चे  
शॉपिंग मॉल से चीजें/अपनी पसंद नापसंद के  
बाजार से अनभिज्ञ बच्चे/अक्सर अपनी नासमझी में  
समझदार होते हैं/बंपर सेल में  
बंपर डिस्काउंट पाकर

आखिर न जाने क्यों/हमारी समझ से  
इतर होता है/इन बच्चों की समझ कि  
तमाम अवरोधों और पाबंदियों के बावजूद  
अपने-अपने समय से पहले  
आगे निकल जाते हैं बच्चे  
वर्जनाओं के पहाड़ ढहाते हुए

हमारी सुचिता में/आसान नहीं है  
इस नादान बच्चों के लिए  
वक्त और दुनियादारी के/केचुल से मुक्त होना  
उसी तरह आसान नहीं है/ग्लोब पर खिंची/  
आड़ी-तिरछी रेखाओं में

अक्षांश और देशांतर का मर्म समझना  
देखते ही देखते/न जाने कब और कैसे  
समय को ठेंगा दिखाते

अपनी आयु से कई गुना बड़े बन जाते हैं  
यही नासमझ बच्चे/सारी दुनिया को मुट्ठी में जकड़  
नचाते हैं ग्लोब को/अपनी नाजूक उंगलियों पर।

— अशोक आशीष

## हिंदी हिंदुस्तान की

यह हिंदी हिंदुस्तान की  
यह भाषा है अभिमान की  
कोटि-कोटि जनता के  
शत शक्ति के आह्वान की  
छंदों में आजादी का शंखनाद है  
अत्याचारी का अंतर्नाद है  
इसमें है अग्नि  
बलिदानों की हुंकार भरी है  
वीरों की ललकार भरी है  
कोटि-कोटि जनता की खातिर  
यह हिंदी हिंदुस्तान की  
यह शक्ति है वरदान की  
यह भाषा है अभिमान की  
वीर भगत की फांसी इसमें  
तलवारों की झांसी समय  
इसमें सोए प्राण जगाए  
वीर हथकड़ियों में मुस्कुराए  
कोटि-कोटि जनता की वाणी  
यह मजदूरों की किसानों की  
यह हिंदी हिंदुस्तान की  
यह भाषा है अभिमान की  
तुलसी सूर कबीर की  
रसखान रहीम और मीरा की  
सींचा है इसको  
पंत, प्रसाद और निराला ने  
कोटि-कोटि जनता की ताकत  
भारत के पहचान की  
यह हिंदी हिंदुस्तान की

— विनय कुमार झा

# चित्र वीथिका

मंडल के साहिबगंज स्टेशन पर कार्यरत रेल कर्मी बच्चों के लिए जल ही जीवन है विषय पर आयोजित चित्रांकन प्रतियोगिता में सफल प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय प्रविष्टियां एवं प्रतिभागियों हेतु पुरस्कार वितरण के दृश्य



## छायाचित्र

मालदा मंडल के द्वारा स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के दृष्य ।

